ISSN 2279-0489

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY HALF YEARLYRESEARCH JOURNAL

GENIUS

VOLUME - VI ISSUE - I AUGUST - JANUARY- 2017-18 AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed

Journal No. 47100

IMPACT FACTOR / INDEXING
2016 -4.248
www.sjifactor.com

✦ EDITOR ✦

Assit. Prof. VinayShankarraoHatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

✦ PUBLISHED BY ✦

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangab

HINDI			
१	अमित गंगानी	संगीत की शक्ति	१-२
२	प्रा. पोटकुले एच. टी.	सुरेंद्र वर्मा के उपन्यास 'छोटे सैयद बड़े सैयद' में राजनीतिक चेतना	३-६
३	सुधीर कुमार डॉ. अरुण कुमार	उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जोखिमपूर्ण व्यवहार का उनके लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन	७-१८
४	डॉ. लक्ष्मी गुप्ता	नयी कविता की भावभूमि पर कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की भावाभिव्यंजना	१९-२४
५	डॉ. भगवान पी. कांबळे	मनोज सोनकर के काव्य में अभिव्यक्त विद्रोह	२५-२८

'जिनिअस' या सहामधि प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्यांची वैयक्तिक मते आहेत. तसेच शोध निबंधाची जबाबदारी स्वत: लेखकावर राहील.

हे नियत कालिक मालक, मुद्रक, प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर ॲण्ड प्रिंटर्स, जयसिंगपूरा, विद्यापीठ गेट, औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

५

मनोज सोनकर के काव्य में अभिव्यक्त विद्रोह

डॉ. भगवान पी. कांबळे
सहयोगी प्राध्यापक , हिंदी विभाग, शास्त्रीय ज्ञान विज्ञान, महाविद्यालय, औरंगाबाद.

आधुनिक युग समस्याँ से पिछड़ा है, इसी से आम आदमी का जीवन समझ में आता है । भारत देश को स्वतंत्र्य होकर कई साल हुए लेकिन सच्चा रुप में आम व्यक्ति को आझादी मिली है क्या? सवाल खड़ा होता है । कही कारणों से लोगों का शोषण होता है । लाग न्याय माँगने के लिए न्यायालय में जाते है, तो वहाँ पैसों से सच का झूठ ओर झूठ का सच किया जाता है । यही वर्तमान स्थिति है ।

कवि ने समाज में जागृति करने का प्रयास किया इसी वजह से लोग अन्याय के विरुद्ध विद्रोह कर रहे है । अपने हक्क की बात भी ----- ! परिवर्तन साहित्य के कारण हो गया । इसी कारण साहित्य जीवन में महत्वपूर्ण है ।

मनोज सोनकर साठोत्तरी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर है । उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया जिसमें कविता संग्रह के रुप में पंख कटा मेघदूत, धतुरा, कच्चा चिट्ठा, ओस धुआं घटा घर, शोषितनामा, शबरी-संबोध, चित्राधार, स्नानागार, अभंगालोक, दोहांगन, खुर्दबीन, चित कबरी, रंगालय, सिजो – साज, ब्लैड बज्म आदि । इसी के, साथ कथात्मक साहित्य में हलफनात, पोस्टर्स, जाँच, निगेटिव्ह, आदित्य है ।

मनोज सोनकर ने साहित्य के माध्यम से शिक्षण व्यवस्था, नारी शोषण, प्रांतवाद, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, दलित जीवन आम आदमी की पीड़ा,बेरोजगारी, आदि का चित्रण किया इसी के साथ उस व्यवस्था के प्रति विद्रोह भी----।

वर्तमान में नारी शोषण समस्या अभिशाप के रुप में सामने आई है । कई कारणों से नारी का शोषण होता है, अत्याचार भी-----। इस समस्या को मनोज सोनकर ने कविता में बताया । नारी का दहेज प्रथा के रुप में शोषण हो रहा है । इस प्रथा के प्रति नारी विद्रोह कर रही है । जिस रुप में सीता का शोषण किया इस रावण के प्रतिक के रुप में स्त्री पर बलात्कार भी हो रहे है । तब भी उसे न्याय नहीं मिलता । इस के प्रति नारी विद्रोह कर रही है । इसका चित्रण कवि इस इस रुप में करते है –

" सीता इस फैसले पर पहुँची है
कि अग्नी परीक्षा में खरी उतरना
ही उसकी सबसे बड़ी असफलता भी शायद,
इसलिए मैं बिना चिता के जल रही हूँ
राम और रावण के बीच ढल रही हूँ । - १

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

इस तरह से नारी ने अन्याय के प्रति आवाज उठाया है । मनोज सोनकर ने शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार किया । वर्तमान ने शिक्षा के क्षेत्र में भारत पिछड़ा है । स्कूल, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय संख्या के दृष्टि से बहोत हैं । प्रगति कुछ नही । इस कारण समाज में प्रगति नही । शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में मनोज सोनकर विद्रोह करते है कि,

शिक्षा : बेचारी,
हमेशा रोती फिरे
बजट - मारी ---- ।'' २

इसी से वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की क्या अवस्था है, समझ में आती है ।

आधुनिक युग में भारत देश में कई कारणों से राज्यों –राज्यों में विवाद होते है । सीमा, पानी, भाषा को लेकर सबसे ज्यादा । इसे भड़काने का काम राजनेता लोक करते है । इस समस्या का हल करने के लिए कवि ने साहित्य के माध्यम से उपाय बताएँ । इसी के साथ जो विवाद निर्माण कर रहे हैं, इनके खिलाफ लोगों को जागृत किया ।

मनोज सोनकर कहते है, जो विवाद भड़का रहे है इसे समझे । पत्रकारों पर ज्यादा भरोसा मत कीजिए । क्योंकि कई पत्रकार राजनेता से मिले होते है, इसी के कारण वह बढ़ा चढ़ाकर बातें बताते है । इसे समझना जरुरी है । प्रांतवाद के संदर्भ में कवि आम लोगों में जागृति करते है कि ,

जमा यहाँ देश का कोना- कोना है
कोना जब कोने से टकराता है
जहर ही फैलाता है
यह बात और है
अखबारों में कोई
जहर का अमृत बताए
या अमृत को जहर
समझ बौखलाये । '' ३

इसी से प्रसार माध्यम ,कितने नीच काम करते है । समझ में आता है । समाज में धर्म के नाम पर कई दंगे मचाये जाते है, इसी कारण समाज में दूषित वातावरण निर्माण होता है । धर्म के नाम पर जो समाज में द्वेष निर्माण कर रहे है, उनके प्रति मनोज सोनकर कविता से विद्रोह करते है –

''धर्म स्वतंत्र्य विधेयक
समर्थन में दलित
विरोध में मोर्चा । जुलूस ! सभा !
धर्म मेरा
ब्रम्हा माया मोक्ष देता है

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

रोटी नहीं देता ।" - ४

भारत में प्राचीन काल से जाति के नाम पर शोषण होता है । काम भी जाति के आधार पर थे । शिक्षा बहुजनों के लिए नहीं मिलती थी । सवर्ण लोग जाति के नाम पर गरीब लोगों का शोषण करते थे । इसी समस्या को मनोज सोनकर ने साहित्य में अभिव्यक्त किया वह कहते है, संविधान में जातिभेद करते है । इसी कारण इन्होंने जो लोग जातिभेद फैलाते हैं । इनके खिलाफ लोगों को जागृत किया । शिक्षा मिलने के बाद लोग जातिभेद करनेवाले व्यक्ति के प्रति आवाज उठाने लगे । जातिभेद के संदर्भ में कवि कहते है कि,

" मुँह से जन्में थे ब्राम्हण !
भुजा से क्षत्रिय !
जाँघ से वैश्य !
और पैर से शुद्र !
तो खड़े कैसे रहोगे ?
लँगडे हो जाओगे ------ !" - ५

वर्तमान में चुनाव दिखावे के रुप में होते है ! कोई कर्म से चुनकर नहीं आते पैसों से आते है ! बहोत मात्रा में राजनीति में गुंडे लोग दिखाई देते है ।

मनोज सोनकर कहना चाहते है कि, चुनाव नजदिक आयें की राजनेता वाद करते है । चुनकर आने के बाद कुछ नहीं करते ! इसी कारण कवि गंदी रजनीति के विरुद्ध लोगों में जागृति करता है ! लढ़ने के लिए चेतना निर्माण करता है ! चुनाव के संदर्भ में कवि कहते है कि,

" चुनाव आये
नारी , वादे, बोजना
जीभ पर लाये !" - ६

समान में आम आदमी को न्याय नहीं मिलता । न्याय माँगते –माँगते जिंदगी गुजर जाती है । लेकिन न्याय नही मिलता । जो गुन्हेगार है , वहीं खुलेआम समाज में घुमते है । जो गुन्हा न कर के भी जल में सड़ रहे है । यह भारत देश की यर्थात स्थिती है ।

मनोज सोनकर साहित्य से आम लोगों को अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए प्रोत्साहित करते है । अत: तुम जरुर न्याय मिलेगा ऐसा आशावाद रखने के लिए कहते है । न्याय को संदर्भ में कहते है –

" दूध –दूध अब ना रहा,
पानी ही अब दुध ।
ऐसा न्याय मिल कहा,
यार जरा तू बूझ ।" ७

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

इस तरह से अन्याय के विरुद्ध जागृति की । निष्कर्ष रुप में हम कह सकते है , कि जब तक समाज में परिवर्तन नहीं होगा तब तक समाज की प्रगति नही होगी ।

जिस दिन नारी शोषण, शिक्षा व्यवस्था, जातिभेद प्रांतिविाद आदि समस्याएँ खत्म हो जाएगी, तभी सही मात्रा में कवियों के स्वप्न सफल हो जाएगें ।

संदर्भ सूची

१. मनोज सोनकर :- 'धतूरा,' पृ. ७४

२. मनोज सोनकर :- 'रंगालय', पृ. ५८

३. मनोज सोनकर :- 'कच्चा चिट्ठा,' पृ. २१

४. मनोज सोनकर :- 'घंटाघर', पृ. ६५

५. मनोज सोनकर :- 'शोषितनामा', पृ. १५

६. मनोज सोनकर :- 'सिजो – साज' पृ. १७

७. मनोज सोनकर :- 'दोहांगन' पृ. १६

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad